अध्याय
01

प्राकृतिक संसाधन

परिचय :–

भूमि मृदा जल प्राकृतिक बनस्पति और वन्य जीव यह सभी प्राकृतिक संसाधन हैं। इनमें से भूमि, मृदा और जल अजैव तथा प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीव जैव संसाधन हैं। इन संसाधनों का मानव के जीवन में व्यापक महत्व है। इन संसाधनों के बिना पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन संभव नहीं है। अतः यह जरूरी है कि हम लोग इन संसाधनों के बारे में इनके उपयोग और इका संरक्षण कैसे हो इसके बारे में जानने का प्रयास करें।

अब बताएं–

(1) निम्न में से कौन जैव संसाधन हैं?

(क) भूमि (ख) जल (ग) मृदा (घ) वनस्पति

उत्तर : घ

(2) अजैव संसाधन कौन है?

(क) नदी (ख) मानव (ग) बाघ (घ) सूक्ष्मजीव

उत्तर : क

पाठ के मुख्य बिंदु :–

भूमि (Land)

सभी संसाधनों में भूमि एक महत्वपूर्ण संसाधन है क्योंकि मानव के सभी क्रियाकलाप भूमि पर ही होते हैं। जैसे– कृषि कार्य, भवन निर्माण, आवागमन के साधनों जैसे सड़क और रेल का निर्माण आदि सभी कार्य बिना भूमि के संभव नहीं है। हमारी पृथवी के कुल क्षेत्रफल का लगभग 30% भाग भूमि है और 70% भाग जल से घिरा है। लेकिन इस 30% भूभाग का भी बड़ा भाग ही मनुष्य के रहने योग्य नहीं है। बर्फ से घिरा अंटार्कटिक पहाड़ी, दलदली और रेगिस्तान से घिरे क्षेत्र में मनुष्य अपना आवास बनाने में कठिनाई महसूस करता है।

भूमि उपयोग (Land Use)

भूमि का उपयोग कृषि वन भवन निर्माण, सड़क, रेल, उद्योग आदि के लिए किया जाता है। इसे ही भूमि उपयोग कहते है।

© JCERT not to be republished

विश्व एवं भारत में भूमि उपयोग प्रतिरूप

भूमि उपयोग के महत्वपूर्ण प्रकारों का विश्व भारत एवं झारखण्ड में वितरण इस प्रकार है–

	कृषि योग्य भूमि	चरागाह	वन	अन्य
विश्व	11%	26%	31%	32%
भारत	57%	04%	22%	17%
झारखण्ड	23%	1%	29%	47%

गतिविधि :–

उपर्युक्त आंकङों के आधार पर भारत, विश्व और झारखंड के भूमि उपयोग वितरण हेतु वृत्त चार्ट बनाएं।

स्वामित्व के आधार पर भूमि के प्रकार

निजी भूमि (Praivate Land) – इस प्रकार की भूमि में किसी व्यक्ति का निजी अधिकार होता है। इसका उपयोग सार्वजनिक रूप से उस व्यकथ्त के सहमति से ही किया जा सकता है।

सामुदायिक भूमि (Public Land) – इस पर पूरे समाज का अधिकार होता है। इस प्रकार से यह सरकारी भूमि होती है।

भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन पूथ्वी पर भूमि की उपलब्धता सीमित है। जबकि जनसंख्या और असिमित रूप से बढती जा रही है। बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकता की पूति के लिए भूमि की आवश्यकता होती है। इसके अनुरूप बस्तियों का निर्माण, रेल मार्ग, उद्योग धंधों को बढावा देने और व्यापारिक क्रियाकलापों को बढ़ाने के लिए भूमि की जरूरत पङती है। इस कारण वर्तमान समय में भूमि परिवर्तन साफ दिखाई पङता है। पहले जहां कृषि योग्य भूमि थी अर्थात जिस भूमि पर कृषि कार्य किया जाता था उस भूमि पर अभी बङे –बङे भवन और अन्य दूसरी इमारतें बनी दिखाई पङती है

भूमि संरक्षण (Land Conservation)-

गत कुछ दशकों में मानव ने काफी प्रगति की है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संसाधनों का काफी दोहन किया गया है। इस कारणभूमि के बहुत बड़े भाग में भूक्षरण की समस्या हैं। कृषि योग्य भूमि तथा बस्तियाँ बसाने के लिए जंगलों का विनाश, अतिचारण भी भूक्षरण के कारण हैं।

भूमि संसाधनों के संरक्षण के लिए वनरोपण, अतिचारण पर रोक, खनन क्रियाओं का प्रबंधन,शहरीकरण का प्रबंधन इत्यादि।

© JCERT not to be republished

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

(क) हमारी पृथ्वी के कुल क्षेत्रफल का ..... भाग भूमि है।

(ख) मनुष्य के सभी क्रियाकलाप ..... पर होते हैं।

(ग) ..... भूमि पर पुरे समाज का अधिकार होता है।

(घ) भारत में कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत ..... है।

उत्तर :– क – 30% ख – भूमि ग– सामुदायिक घ– 57%

मृदा निर्माण (Soil Formation) मृदा का निर्माण चट्टानों के कणों के जैव पदार्थों के साथ कई प्रकार की जैवीक और रासायनिक प्रक्रियाओं के फलस्वरूप लंबी अवधि के पश्चात् होता है। मृदा निर्माण के प्रमुख कारक जनक चट्टान का स्वरुप, जजवायु, स्थलाकृति जैव पदार्थो की उपस्थिति इत्यादि है।

मृदा परिच्छेदिका (Soil Formation) मृदा की मोटाई सतह से कुछ सेंटीमीटर से कुछ मीटर तक हो सकती है। मृदा की उपरी परत से आधार चट्टान तक मृदा के तीन संस्तर पाए जाते हैं। इका संघटन एवं रंग अलग अलग होता है। इसके अनुप्रस्थ काट को ही मृदा परिच्छेदिका कहते है।

मृदा वर्गीकरण (Types Of Soil) उत्पति, रंग, संयोजन तथा स्थिति के आधार पर भारत में आठ प्रकार की मृदा पाई जाती हैं – जलोढ मृदा, काली मृदा, लाल और पीली मृदा, लेअराइट मृदा, शुष्क मृदा, लवण मृदा पीटमय और वन मृदा।

वितरण–

जलोढ मृदा (Alluvial Soil) यह भारत के 40 प्रतिशत क्षेत्र मे पाई जाती है। इसका फैलाव पंजाव, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, पचिम बंगाल, गुजरात, राजस्थान में है।

काली मृदा (Black Soil) यह मिट्टी दक्कन के पठार, महाराष्ट्र, गुजरात, आँध्रप्रदेश, तेलंगाना, तथा तमिलनाडु में पाई जाती है।

लाल और पीली मृदा (RED AND YELLOW SOIL) - यह मृदा रवेदार चट्टानों वाले क्षेत्रों में पाए जाती है। पश्चिमी घाट के गिरीपद क्षेत्र, ओडिसा, छत्तीसगढ तथा मध्य गंगा के मैदान के दक्षिणी भाग में इसका फैलाव है।

लेटराइट मृदा (Laterite Soil) लेटराइट शब्द लैटिन के लेटर से बना है जिसका अर्थ होता है इंटा यह मृदा तमिलनाडु, आँध्रप्रदेश, केरल, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, ओडिसा और असम के पहाडी क्षेत्रों में पाई जाती है।

शुष्क मृदा (Dry Soil) इसमें बालू की मात्रा ज्यादा होती है। इस मृदा का विकास मुख्यताः पष्चिमी राजस्थान में हुआ है।

© JCERT not to be republished